संस्था की परिसम्पत्तियां

1. रं मं बं/रं चिम हल्द्वानी :

- रं मं बं हल्द्वानी का शिलान्यास 15 जनवरी, 2006 को डॉ0 श्रीमती इन्दिरा हृदयेश, तत्कालीन मा0 मंत्री, लोक निर्माण, राज्य सम्पत्ति, संसदीय कार्य, सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, उत्तराखण्ड सरकार के कर कमलों द्वारा श्री नृप सिंह नपलच्याल (आई.ए.एस.), संरक्षक, रं कल्याण संस्था की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था। लगभग 7 वर्षों में इस भवन का निर्माण पूर्ण हुआ और इसका लोकार्पण 06 जनवरी, 2013 को डॉ0 श्रीमती इन्दिरा हृदयेश, तत्कालीन मा0 मंत्री, लोक निर्माण, राज्य सम्पत्ति, संसदीय कार्य, सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, उत्तराखण्ड सरकार के कर कमलों द्वारा विशिष्ट अतिथि श्री के.सी. सिंह (बाबा), मा. सांसद, नैनीताल, श्री बंशीधर भगत, मा. विधायक, कालाढूंगी की गरिमामयी उपस्थिति एवं श्री नृप सिंह नपलच्याल, संरक्षक, रं कल्याण संस्था की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

- इस भवन को रं समाज के सभी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अन्य विविध गतिविधियों हेतु उपयोग में लाया जाता है। यह भवन तीन मंजिला बनाया गया है। भवन के सबसे ऊपरी तल के 5 कमरे छात्रावास हेतु रखे गये हैं जिसमें रं गरीब बच्चों को प्रवास की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध करायी जाती है।

- भवन में एक अतिथि कक्ष एवं दो डोरमेट्री कक्ष भी हैं जिसमें बाहर से आने वाले अतिथि व दूरस्थ गांवों से उपचार हेतु आने वाले रं–रंस्या को प्रवास हेतु सुलभ कराया जाता है।

- रं मं बं हल्द्वानी में दो बड़े हाल भी बने हुये हैं जिनको शाखा द्वारा शादी, जन्मदिन तथा अन्य समारोह के लिए किराए पर देने का प्रविधान किया गया है। संस्था के सदस्यों के लिए मात्र ₹ 2,000 शुल्क है और अन्य के लिए ₹ 11,000 का शुल्क रखा गया है।

2. रं मं बं/रं चिम, देहरादून :

- देहरादून में राज्य सरकार की वित्तीय सहायता से सामुदायिक 'रं मं बं/रं चिम' का निर्माण वर्ष 2008 में प्रारम्भ किया गया था जिसे वर्ष 2012 में लोकार्पित किया गया।

- रं मं बं/रं चिम, देहरादून में सामुदायिक कार्यक्रमों के आयोजन के साथ–साथ निर्धन परिवारों की प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाली रं छात्राओं के लिए शेयरिंग बेसिस पर छात्रावास की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जा रही है तथा लाइब्रेरी एवं कम्प्यूटर ट्रेनिंग की भी व्यवस्था की गई है। इस छात्रावास में रहकर कतिपय छात्राओं ने बैंक, शिक्षा आदि सेवाओं में सफलता प्राप्त की है।

- रं यूथ फोरम ने अपने सहयोगी रं लोगों की मदद से निःशुल्क अखबार तथा पत्रिकाओं की व्यवस्था भी की गयी है।

- इस भवन में रं कल्याण संस्था का प्रधान कार्यालय भी संचालित है तथा हाल में वीडियो कान्फ्रेसिंग, साउंड सिस्ट्म, सी0सी0 टी0वी0 आदि की आधुनिक सुविधाएं सुलभ हैं जिनका उपयोग कार्यकारिणी समिति की बैठकों, कार्यशाला एवं अधिवेशन आदि अवसरों पर किया जाता है।

3. रं संग्रहालय धारचूला :

- भारत नेपाल एवं तिब्बत के त्रिकोणात्मक सीमा पर स्थित 'रं राजू' के दारमा, व्यास एवं चौंदास घाटी में निवास करने वाली रं जनजाति समाज के अस्तित्व एवं इतिहास की कहानियां सदियों से प्रचलित हैं। रामायण काल में माता सीता एवं प्रभु श्रीराम तथा महाभारत काल के पांडवो के वनवास से लेकर महर्षि वेद व्यास के प्रवास, उनके जीवन यापन एवं साधना तथा स्थानीय देवी–देवताओं के आगमन, प्रवास सहित कई कहानियों से रं जनजाति के गौरवमयी इतिहास एवं जीवन पद्धति वर्तमान में सदियों बाद भी लगभग उसी मूल रूप में विद्यमान है। कालांतर

में बाहरी समाज के सम्पर्क में आने के बाद रं समाज में भी संस्कृति संक्रमण एवं आधुनिकता का प्रभाव बढ़ने लगा तो समाज की मालिकता, वेश–भूषा, बोली–भाषा, रीतिरिवाज एवं मान्यताओं को संरक्षित करने के विचार का भी जन्म हुआ। आज रं जनजाति समाज के लिए यह गर्व एंव सौभाग्य की बात हैं कि रं कल्याण संस्था द्वारा रं संस्कृति, जीवन पद्धति एवं पवित्र परंपराओं को प्रदर्शित करने हेतु धारचूला नगर में रं संग्रहालय की स्थापना की गई है।

- रं संग्रहालय भवन निर्मित होने के पूर्व रं कल्याण संस्था के दिशा निर्देश पर दारमा, व्यास एवं चौंदास घाटी के दुर्गम गांवों से पौराणिक दैनिक उपयोग के बर्तन, कृषि यंत्र, साज–सज्जा के सामान, युद्ध में प्रयुक्त होने वाले सामान/हथियार, पठन–पाठन आदि रं जीवन पद्धति से संबधित सामानों को एकत्रित करने हेतु टीम गठित की गई और श्री हनुमान सिंह नबियाल की अगुवाई में यह भगीरथ प्रयास किया गया। उनकी अगुवाई में स्थानीय रं संस्कृति के भिज्ञ लोगों के प्रयासों से दो माह के कठिन प्रयास से काफी संख्या में आर्टिफैक्ट्स एकत्रित किए गए, जिन्हें स्थानीय भोटिया पड़ाव में रखा गया तथा समस्त आर्टिफैक्ट्स को क्रमबद्ध कर दिनांक 19 फरवरी 2009 को अस्थाई रूप से भोटिया पड़ाव में ही रं संग्रहालय की स्थापना की गई, जिसका उद्घाटन प्रसिद्ध समाजसेवी एवं दानवीर श्री नन्दराम लाला जी ने किया। विशिष्ठ अतिथि के रूप में तत्कालीन उपजिलाधिकारी श्री नवनीत पांडे जी भी उपस्थित थे। कालान्तर में रं संग्रहालय का भवन बन जाने पर रं संग्रहालय को स्थानांतरित कर वर्तमान स्थान पर स्थापित किया गया।

- रं संग्रहालय का नवीन भवन निर्मित होने के उपरान्त रं कल्याण संस्था के सदस्यों द्वारा दारमा, व्यास एवं चौंदास घाटी के ग्रामों से पुरातन वस्तुओं/सामग्रियों को संग्रहीत करने हेतु पुनः अभियान चलाकर लोगों को ऐसी वस्तुएं दान देने हेतु प्रेरित किया गया। इन प्रयासों के फलस्वरूप वर्तमान में रं संग्रहालय धारचूला में दारमा, व्यास एवं चौदास तथा व्यासी शौका समाज के परिवारों द्वारा प्रदत्त अति महत्वपूर्ण कुल 630 आर्टिफैक्ट्स उपलब्ध हैं जिसमें स्थानीय दानदाताओं के सहयोग से निरंतर वृद्धि हो रही है। रं संग्रहालय द्वारा दानदाताओं के नाम को संग्रहालय में स्थाई रूप से सुरक्षित रखना रं संग्रहालय की जिम्मेदारी मानते हुए समस्त दानदाताओं के नाम कम्प्यूटर रिकॉर्ड, रजिस्टर तथा सामान के साथ लगाये जाने वाले टैग में अंकित किया जाता है।

- रं संग्रहालय की स्थापना के उपरान्त मा0 मुख्यमंत्री, मा. केन्द्रीय मंत्रीगण, मा0 सांसद, मा0 विधायक सहित राज्य उच्च न्यायालय के मा. मुख्य न्यायाधीश, जिलाधिकारियों सहित कई विशिष्ठ जनों ने संग्रहालय का भ्रमण किया है एवं उन्होंने रं इतिहास परंपरा व कठिन परिस्थितियों के बावजूद बा–तित्ये (बाप–दादा) लोगों के संघर्ष व शौर्य को सराहा है। बाहर से आने वाले यात्रीगण एवं पर्यटक संग्रहालय के माध्यम से रं समाज के विशुद्ध जीवन पद्धति को जानकर हैरत के साथ रं पूर्वजों को नमन करते हैं एवं उनके बनाये ठुमचारू (रीति–रिवाज) एवं दूरदर्शिता से खासे प्रभावित होते हैं। कई शोध करने वाले छात्र समय–समय पर रं समाज के जीवन पद्धति को करीब से जानने के लिए संग्रहालय में आते हैं एवं संग्रहालय से जानकारी लेकर लाभ प्राप्त करते हैं।

- रं कल्याण संस्था द्वारा अपने अथक प्रयासों द्वारा रं संस्कृति के महत्व व गौरव के प्रति रं समाज को जागरूक करते हुए 90 के दशक में लगभग विलुप्त हो रही च्युंगबाला, बीरा लक्ष्यब, जीरू–कण्ठी, छोकरों–बाली सहित रंगा–ब्येंठलों को पुनर्जीवित करने का कार्य किया गया है जिसके फलस्वरूप आज हर घर में रंगा–च्युंगबाला सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बन चुका है।

- संग्रहालय की आंतरिक साज–सज्जा/विकास हेतु अलाया डिजाइन स्टुडियो तथा छित्कू संस्था के सहयोग से डिजाइन तैयार कराकर डिजायन के क्रियान्वयन हेतु वित्तीय सहायता हेतु ओ.एन.जी.सी. से प्राप्त की गई है। इसके अतिरिक्त संग्रहालय भवन के बाह्य एवं आन्तरिक सौन्दर्यीकरण तथा ओपन एयर थिएटर निर्माण हेतु मा. सांसद निधि/मा.विधायक निधि से भी वित्तीय सहायता प्राप्त की गयी है जिसका कार्य वर्तमान में गतिमान है।

4. रं पुस्तकालय धारचूला :

- धारचूला में पठन पाठन के स्तर को उठाने तथा बच्चों को विविध प्रतियोगिताओं के लिए उचित तैयारी का अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भोटिया पड़ाव स्थित कम्युनिटी हॉल में वर्ष 2012 में रं पुस्तकालय की स्थापना की गई जिसकी देखभाल के लिए श्री दौलत सिंह फकलियाल को प्रभारी बनाया गया। पुस्तकालय नियमित रूप से भोटिया पड़ाव में ही संचालित हो रहा था, किन्तु पुस्तकालय नगर से थोड़ा दूर स्थित होने के कारण अपेक्षित संख्या में लोग नहीं पहुंच पा रहे थे, फलतः सम्यक विचार विमर्श के बाद पुस्तकालय को दिनांक 15 अगस्त,

2021 को 'रं संग्रहालय' के साहित्य कक्ष में स्थानान्तरित करते हुए 'रं पुस्तकालय' के रूप में स्थापित किया गया जो नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है। पुस्तकालय का लाभ स्थानीय छात्र–छात्राओं एवं अन्य व्यक्तियों द्वारा उठाया जा रहा है। रं संग्रहालय पुस्तकालय में विविध विषयों के वर्तमान में कुल लगभग 2050 पुस्तकें हैं जिनमें इनसाईक्लोपीडिया, कुमाऊँनी साहित्य, इतिहास, यात्रा वृतांत सिविल सर्विसेज तथा अन्य प्रतियोगिताओं से सम्बन्धित पुस्तकें सम्मिलित हैं।

5. 'रं मं बं/रं चिम' तथा रं छात्रावास पिथौरागढ़ :

- राज्य सरकार की वित्तीय सहायता से वर्ष 2015 में रं छात्रावास का निर्माण किया गया। इस छात्रावास में 16 छात्रों तथा 16 छात्राओं के लिए आवासीय व्यवस्था है। पिथौरागढ़ में पढ़ने वाले निर्धन परिवारों के रं छात्र तथा छात्राएँ इसका लाभ उठा रहे हैं। साथ ही, वाडर्न के लिए भी आवासीय सुविधा है।

- छात्रावास में पुस्तकालय, कम्प्यूटर लैब, सी.सी.टी.वी. तथा खेलकूद की भी सुविधाएं विकसित की गयी हैं।

- छात्रावास के दैनिक खर्चों की व्यवस्था शाखा द्वारा अपने सदस्यों का सहयोग प्राप्त करते हुए की जाती है तथा श्री मंगल सिंह कुटियाल द्वारा भी प्रतिमाह ₹ 10,000.00 की सहायता नियमित रूप से दी जा रही है।

- कालान्तर में छात्रावास भवन की छत पर एक अतिरिक्त मंजिल का निर्माण कराकर रं मं बं/रं चिम का भी निर्माण किया गया जिसका उपयोग समय–समय पर शाखा की बैठकों, स्वास्थ्य शिविर, रक्तदान, सम्मान समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा अन्य सामाजिक/ सामूहिक कार्यक्रमों के लिए किया जा रहा है।

6. 'रं मं बं/रं चिम' दिल्लीः एक आशियाना रं मरीजों के लिए

- समस्त रं समाज के लिए यह एक गर्व का विषय है कि रं कल्याण संस्था ने दिल्ली में विशेषकर ईलाज करवाने के लिए आने वाले रं लोगों की रहने की व्यवस्था के लिए एक रं मं बं का सपना देखा और जिसे सफलतापूर्वक स्वयं के प्रयास से पूर्ण किया भी किया। 21वीं शदी की शुरूआत में दिल्ली में एकायक ईलाज करवाने के लिए हमारे सुदूर गांवों, कस्बों, नगरों एवं अन्य स्थानों से आने रं लोगों की संख्या में वृद्धि हुई। कई रं लोग रहने की उचित व्यवस्था न होने या रिश्तेदारों के न होने या आर्थिक व अन्य कारणों से दिल्ली नहीं आ पाते थे। इसे देखते हुए दिल्ली के रं लोगों ने सोचा की एक रं मं बं दिल्ली में भी हो। इस विषय को स्थानीय संस्था द्वारा रं कल्याण संस्था की हर ए.जी.एम. एवं मीटिंग में समय–समय पर उठाया गया जो पिथौरागढ़ ए.जी.एम., 2011 में जाकर स्वीकृत हुआ। दिल्ली शाखा ने वरिष्ठ लोगों के मार्गदर्शन में एक कोर कमेटी का गठन किया। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए एक बजट का लक्ष्य लेकर देश–विदेश में रहने वाले सभी रं लोगों से सहयोग देने का वचन लिया गया। वर्ष 2017–18 शुरू होने के बाद सभी वचनबद्ध रं लोगों से सहयोग राशि रं कल्याण संस्था के बैंक खातें जमा करने का निवेदन किया गया जिसे सब लोगों ने पूरे दिन से तय समय पर पूर्ण किया।

- अप्रैल, 2017 में केन्द्रीय कार्यालय ने दिल्ली शाखा और कोर कमेटी के सदस्यों के साथ दो दिनों तक चुने गये प्रस्तावित भवनों का अन्तिम निरीक्षण कर रं मं बं के लिए बजट के अनुरूप दिलाश कालोनी स्थित एक भवन सुनिश्चित करने के लिए बस व रेलवे स्टेशन आने–जाने की सुगमता, आस–पास मेट्रो व सिटी बस, अस्पताल, दवाईयों, बाजार आदि की सुविधा एवं नजदीक में रहने वाले रं परिवारों विशेषकर रं डाक्टरों की बहुलता इत्यादि को मापदंड माना। दिल्ली शाखा के पदाधिकारियों द्वारा भवन निर्माता से एक लम्बी बातचीत के बाद एक उचित मूल्य (काफी कम करवाकर) तय किया गया। रं मं बं दिल्ली की रजिस्ट्री भी केन्द्रीय कार्यालय के पदाधिकारियों के नेतृत्व में जून, 2017 के अन्तिम सप्ताह में कर ली गयी। रं मं बं दिल्ली क्रय करने के लिए लगभग ₹ 89.00 लाख रूपये (रजिस्ट्री एवं अन्य सब जोड़कर) का व्यय हुआ।

- रं मं बं दिल्ली दिलशाद कालोनी, जे–56/टी–1, जे–ब्लॉक भवन के सबसे ऊपर की मंजिल (छत सहित) में सामने की तरफ स्थित है। इसमें तीन शयन कक्ष, एक बैठक हॉल, एक रसोई, दो स्नानघर एवं छत में एक कमरा (स्नानघर सहित) है। भवन में लिफ्ट की सुविधा भी है। भूतल में एक कार और एक स्कूटर पार्किंग की भी व्यवस्था है।

- रं मं बं दिल्ली को सुसज्जित करने के लिए बहुत से रं लोगों ने बढ़–चढ़कर एक–एक वस्तु जो हर किसी घर में दिन–प्रतिदिन प्रयोग होती है, प्रदान की। दिनां 30 जुलाई, 2017 को विधिवत एवं सफलतापूर्वक रं मं बं दिल्ली का गृह प्रवेश पूजा समारोह किया गया जिसमें केन्द्रीय कार्यालय के माननीय पदाधिकारीगण/ सदस्यगण एवं अन्य मेहमान सहित दिल्ली एन.सी.आर. के समस्त रं लोग रं मं बं दिल्ली के कार्यकलाप के लिए केन्द्रीय कार्यालय ने 'रं मं बं दिल्ली प्रबन्धन नियमावली, 2017' जारी की जिसके अनुसार रं मं बं दिल्ली प्रबन्धन के लिए एक प्रबन्धन समिति का गठन केन्द्रीय कार्यालय के अनुमोदन से किया गया। दिनांक 01 अगस्त, 2017 से रं मं बं दिल्ली को विधिवत रं लोगों की सेवा के लिए एक समर्पित कर दिया गया।

7. 'रं मं बं/रं चिम' बरेली :

- रं कल्याण संस्था, बरेली के सदस्यों के द्वारा शाखा के संसाधनों से निर्मित यह भवन सभी शाखाओं के लिए एक उदाहरण है। शाखा द्वारा इस परिसर में एक हाल तथा स्टोर का भी निर्माण करा लिया गया है। यहाँ एक मंदिर भी निर्मित किया गया है। इसी भवन परिसर में बरेली शाखा के सौजन्य से रं कल्याण संस्था के दो वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुए हैं।

8. 'रं मं बं/रं चिम' लखनऊ :

- रं कल्याण संस्था का प्रधान कार्यालय लखनऊ होने के दृष्टिगत संस्था के भवन निर्माण हेतु अविभाजित उत्तर प्रदेश के दौरान ही वर्ष 1992 में 9200 वर्गफीट क्षेत्रफल का भूखण्ड क्रय किया गया और कालान्तर में चारदीवारी का भी निर्माण करा लिया गया था, किन्तु वित्तीय व्यवस्था न हो पाने के कारण लम्बे समय तक भवन का निर्माण नहीं हो पाया।

- उत्तराखण्ड राज्य सृजन के उपरान्त लखनऊ शाखा द्वारा वर्ष 2013 में लखनऊ अधिवेशन के दौरान अपने स्थानीय सदस्यों के साथ–साथ रं कल्याण संस्था से जुड़े अन्य बाहरी सदस्यों से भवन निर्माण हेतु सहयोग राशि प्राप्त करने हेतु अभियान प्रारम्भ किया गया जिसके क्रम में समर्थ रं जनों ने समय–समय पर सहयोग राशि प्रदान की। इसके अतिरिक्त श्री करन सिंह गर्ब्याल, तत्कालीन अधिशासी निदेशक, एन.टी.पी.सी. के द्वारा एन.टी.पी.सी. के सी.एस.आर. मद से भवन निर्माण हेतु ₹ 15.00 लाख की आर्थिक सहायता सुलभ करायी गयी और रं कल्याण संस्था के अनुरोध पर उत्तराखण्ड राज्य सरकार द्वारा भी वर्ष 2014 में ₹ 21.00 लाख की आर्थिक सहायता दी गयी तथा रं कल्याण संस्था के कोष से भी ₹ 7.00 लाख की धनराशि दी गयी।

- उपरोक्त समस्त प्रयासों के फलस्वरूप लखनऊ में रं मं बं/रं चिम के रूप में दो मंजिला भवन वर्ष 2017 में बनकर पूर्ण हो पाया। भवन के भूतल पर हॉल एवं प्रथम तल पर आवासीय कक्ष निर्मित हैं। भवन का उपयोग लखनऊ शाखा द्वारा रं समाज के विभिन्न सामुदायिक गतिविधियों (यथा लखनऊ शाखा की बैठकों, कार्यशाला/अधिवेशन, सामूहिक मिलन/होली मिलन, अभिनन्दन समारोह, वार्षिक खेल/नव वर्ष कार्यक्रम, सेवानिवृत्ति सम्मान, प्रीतिभोज आदि) के लिए किया जाता है।